ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः।
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति॥

(केनोपनिषद् : १)

शिष्यह्लह्लकिसके द्वारा प्रेरित हो कर मन अपने विषयों तक पहुँचता है? किसके समादेश से प्राण अपने कार्य में प्रवृत्त होता है तथा मनुष्य वाणी को बोलते हैं? कौन सर्वोच्च प्रज्ञाशील सत्ता नेत्रेन्द्रिय और कर्णेन्द्रिय को अपने-अपने विषयों के अनुभव में लगाती है?

ब्रह्मचर्य-साधना :

आध्यात्मिक साधना यौनाकर्षण का समाधान है

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

पूर्ण शारीरिक तथा मानसिक ब्रह्मचर्य की संस्थापना ही वास्तविक संस्कृति है। अपरोक्षानुभूति द्वारा जीवात्मा तथा परमात्मा की ऐक्यानुभूति ही वास्तविक संस्कृति है। कामुक सांसारिक व्यक्ति को 'आत्म-साक्षात्कार', 'ईश्वर', 'आत्मा', 'वैराग्य', 'संन्यास', 'मृत्यु' तथा 'शव-भूमि' (कब्रिस्तान) शब्द बहुत ही बीभत्स तथा भयावह लगते हैं; क्योंकि वह विषयों से आसक्त है। नृत्य, संगीत, महिला-सम्बन्धी चर्चा इत्यादि के शब्द उसे अत्यधिक रोचक लगते हैं।

यदि व्यक्ति संसार के मिथ्या स्वरूप का गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करना आरम्भ कर दे, तो विषयों के प्रति उसका आकर्षण धीरे-धीरे लुप्त हो जायेगा। लोग कामाग्नि से विदग्ध हो रहे हैं। इस भीषण व्याधि के उन्मूलन के लिए सभी उपयुक्त साधनों को प्रारम्भ कर उनको उपयोग में लाना चाहिए तथा इस भयानक काम-रूपी शत्रु का उन्मूलन करने में विविध प्रकार की पद्धतियों में से जो भी उनकी सहायक हों, उनसे सभी लोगों को पूर्ण रूप से परिचित कराना चाहिए। यदि वे एक विधि से असफल हो जाते हैं, तो अन्य विधि का आश्रय ले सकते हैं। काम तो असंस्कृत लोगों में पायी जाने वाली एक पाशविक प्रवृत्ति है। इस बात से पूर्ण अवगत होते हुए भी कि पवित्रता की प्राप्ति तथा सतत ध्यानाभ्यास के द्वारा आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना ही जीवन का लक्ष्य है, व्यक्ति को बारम्बार ऐन्द्रिक क्रियाओं को दोहराते रहने से लज्जित होना चाहिए। आपत्तिकर्ता कह सकता है कि इन विषयों की चर्चा खुले आम न करके गुप्त रूप से करनी चाहिए। यह गलत है। तथ्यों को छिपाने से क्या लाभ है? तथ्यों को छिपाना तो पाप है।

आधुनिक संस्कृति तथा नवीन सभ्यता के इन दिनों में, वैज्ञानिक प्रगति के इस युग में सम्भवतः कुछ लोगों को ये पंक्तियाँ रुचिकर न लगें। वे टिप्पणी कर सकते हैं कि इनमें कुछ शब्द कर्णकटु, बीभत्स, क्रोधजनक तथा अश्लील हैं तथा सुसंस्कृत रुचि वाले व्यक्तियों के लिए उपयुक्त न होंगे। यह उनकी नितान्त भूल है। ये पंक्तियाँ मोक्षकामी पिपासु साधकों के मन पर बहुत गहरी छाप छोड़ेंगी। उनके मन पूर्णतः परिवर्तित हो जायेंगे। आधुनिक समाज के उच्च वर्ग के लोगों में कोई आध्यात्मिक संस्कृति नहीं है। शिष्टाचार केवल दिखावा है। आप सर्वत्र ही अत्यधिक दिखावा, पाखण्ड, मिथ्या शिष्टता, निरर्थक औपचारिकताएँ तथा रूढ़ियाँ देख सकते हैं। हृदय-तल से कुछ भी नहीं निकलता। लोगों में निष्कपटता तथा सत्यनिष्ठा का अभाव है। ऋषियों के महावाक्यों के उद्गार तथा धर्मग्रन्थों के अमूल्य उपदेश कामुक तथा सांसारिक व्यक्तियों के मन पर कुछ भी छाप नहीं छोड़ते। वे कठोर भूमि पर बोये हुए बीज के समान अथवा अपात्र व्यक्ति को प्रदान किये हुए अच्छे पदार्थ के समान हैं।

यदि मनुष्य अपवित्र जीवन यापन से होने वाली गम्भीर क्षति को स्पष्टतया जान जाता है तथा पवित्र जीवन यापन द्वारा जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का निश्चय कर लेता है, तो उसे चाहिए कि वह अपने मन को दिव्य विचारों, धारणा, ध्यान, स्वाध्याय तथा मानवता के सेवा-कार्य में व्यक्त रखे।

सभी यौनाकर्षणों का मुख्य कारण आध्यात्मिक साधना का अभाव ही है। कामुकता पर केवल काल्पनिक संयम से आपको कोई सुपरिणाम प्राप्त नहीं होगा। आपको सामाजिक जीवन की समस्त औपचारिकताओं का निर्ममतापूर्वक उच्छेदन तथा शारीरिक-व्यवहार से मुक्त पवित्र जीवन यापन करना चाहिए। आन्तरिक निम्न प्रवृत्तियों के प्रति आपकी उदारता आपको यातना-लोक में पहुँचा देगी। इस विषय में बहाना बनाने से कोई लाभ न होगा। आपको उदात्त आध्यात्मिक जीवन के अपने अभियान में सत्यशील होना चाहिए। उत्साहहीनता आपको पूर्व-दुःखावस्था में ला छोड़ेगी।

मित्रो! अब इस मायिक संसार-रूपी पंक से जाग जाइए। काम-वासना ने आपकी तबाही कर डाली है; क्योंकि आप अविद्या में निमग्न हैं। पूर्ववर्ती जन्मों में आपके कितने ही करोड़ माता, पिता, स्त्री तथा पुत्र हो चुके हैं। यह शरीर मल से पूर्ण है। इस मल-दूषित शरीर का आलिंगन करना क्या ही लज्जा की बात है! यह केवल मूर्खता ही है। इस शरीर का मोह त्याग दीजिए। शुद्ध आत्मा की महिमा पर ध्यान के द्वारा इस शरीर के साथ तादात्म्य भी त्याग दीजिए। शरीर की उपासना त्याग दीजिए। शरीर के उपासक तो असुर तथा राक्षस हैं।

(अनूदित)

मानव-जन्म का उद्देश्य

जब आप जरा-सा भी देखेंगे-समझेंगे कि वास्तविक जीवन क्या है, तो आप भौंचक्के खड़े रह जायेंगे।

आपका यह ऐसा वर्तमान जीवन निरर्थक है। यह तुच्छ और नगण्य ही है, कुछ भी नहीं है यह यदि आप इसे इस रूप में नहीं समझते हैं कि यह उस महान् जीवन में सीधे प्रवेश पाने के लिए एक 'उत्पतन-बिन्दु' है, एक 'दौड़-पथ' है। यह जीवन उस भव्य, महान् लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है जो कि मानव-अस्तित्व का वास्तविक उद्देश्य है। वह उद्देश्य हैह्वह्वउस जीवन में प्रवेश पाना जो ईश्वरीय जीवन है अर्थात् ईश्वरीय जीवन के साथ एक हो जाना है।

मानव-जन्म का पूरा उद्देश्य ही यही है। यह मानव-जन्म हमें दिव्यता तथा पहुँचने के लिए शाश्वत जीवन तक पहुँचने के लिए एक मार्ग के रूप में मिला हुआ है।

स्वामी चिदानन्द

दस सहस्र जागरूकताओं का परिमण्डल (क्षेत्र)

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

कुछ ही पीढ़ियों पूर्व एक लेखक था जो पूर्वीय दर्शन, विचारधारा और अध्यात्मवाद का विशेष प्रेमी था और जो प्राय: भारत और तिब्बत आया करता था। वह आश्रमों में भी आता-जाता रहता था। और मुझे स्मरण है, जब वह एक बार गुरुदेव के दर्शन करने आया था। उसकी लिखी हुई पुस्तकों में से एक का नाम थाह्नह्न'दस सहस्र बुद्धों की धरती'। महत्त्वपूर्ण शीर्षक है!

हम तो केवल एक ही बुद्ध को जानते हैं, वही जाग्रत, ऐतिहासिक व्यक्ति जो २५०० वर्ष से पूर्व अवतरित हुए थे। वह राजपरिवार में जन्मे और ऐश्वर्य में खेले थे। ऐसी सुख-सुविधा कर दी गयी थी कि उनका जीवन सुख-सुविधाओं से ओत-प्रोत रहे, एक भी नकारात्मक दृश्य उनके सामने न आने दिया जाये। फिर एक अत्यन्त सुन्दर राजकन्या से उनका विवाह हुआ और पुत्र-रत्न भी प्राप्त हो गया। इससे बढ़ कर आदर्श सुखी जीवन की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

तथापि धीरे-धीरे लगभग स्वाभाविक ढंग से अपने-आप ही पूर्णतया अनायोजित रूप से उनके मन, बुद्धि और अन्त:करण में एक जागरूकता आने लगी। उन्होंने कुछ ऐसे दृश्य देख लिये, जिनसे उनके मन में जीवन के प्रति गहन चिन्तन आरम्भ हो गया। उन्होंने जो-कुछ देखा था और उस पर गहन चिन्तन के पश्चात् जो-कुछ समझा, उससे उनमें जो जागरूकता आयी, उसके प्रकाश ने उनके समस्त जीवन को उद्भासित कर दिया।

जीवन का यह मोड़ उन्हें अज्ञात की खोज के विस्तृत साम्राज्य में ले आया। राजसी ऐश्वर्य की गोद को त्याग कर वह वनों में एकाकी उसकी खोज में निकल पड़े, जिसके विषय में वह स्वयं भी अनभिज्ञ थे; किन्तु इतना तो उन्हें ज्ञात था कि यह ऐसी खोज है जो उन्हें दु:खों से परे ले जायेगी। यह पथ उस परम आनन्द की ओर ले जायेगा, जहाँ समस्त दु:खों का अन्त हो जायेगा।

क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि यह संसार एक ऐसा अग्नि-पिण्ड है जो भीतर-बाहर, दोनों ओर से ही जल रहा है। इसमें सुख लेश-मात्र भी नहीं है। यह ताप-त्रय से पूर्ण हैह्नह्नवह कष्ट-पीड़ाएँ जो हमारे नियन्त्रण से परे हैं, वह सन्ताप जो अन्य प्राणियों द्वारा झेलने पड़ते हैं तथा तीसरे प्रकार के वह ताप जो हम स्वयं अपने द्वारा अपने भीतर से ही झेलते हैंह्नह्नईर्ष्या, मात्सर्य, अहंकार, क्रोध, निराशा, कुण्ठाएँ, घृणा, रोष, उपेक्षाएँ, असन्तोष तथा ऐसी ही सैकड़ों प्रकार की आन्तरिक अवस्थाएँ हैं।

ऐसी मानसिक अवस्थाएँ उस आत्मा को प्रताड़ित करती रहती हैं, जो वास्तव में इन सबसे पूर्णतया ऊपर और परे है, जो कि व्यक्ति सदा ही हैह्नह्नकिसी भी मानसिक अवस्था से अछूता, कभी भी परिवर्तित न होने वाली वास्तविकता, परम मौन, परम शान्त। वह आत्म-तत्त्व, उस अनुभूति से दूर हट गया है और उन कहीं अधिक निम्न प्रकार के मानवीय व्यक्तित्व में उलझ कर फँस गया है, उसी में पूर्णतया लिप्त हो कर रह गया

है। व्यक्ति अपने मूल केन्द्र से दूर हट कर अनात्म-तत्त्व में उलझ कर रह गया है।

आदि शंकराचार्य ने अपनी महान् प्रेरणास्पद कृति 'विवेकचूडामणि' में इस प्रक्रिया का वर्णन किया है। एक गलती के कारण, सही पहचान के अभाव के कारण तथा शाश्वत और अशाश्वत के बीच विवेक न कर सकने के कारण ही, मानव चैतन्य को अपने निज-स्वरूप में स्थित रहने के स्थान पर निम्नतर स्तर पर आना पड़ा है। और इसी मुख्य गलती, स्वयं को अनात्मा के रूप में पहचानने की मूल अविद्या के कारण तथा 'संसार' नाम की उस 'वस्तु' में उलझ जाने के कारण ही व्यक्ति ताप-त्रय के उस तीसरे स्व-निर्मित ताप का शिकार हो जाता है, जो कि सार हीन, अस्तित्व विहीन, अहं के ऊपर आधारित है। उस अहं के ऊपर आधारित है जो कि कुछ भी नहीं है, किन्तु हमने इसके साथ अपनी पहचान बना कर, इसे इतनी शक्ति प्रदान कर दी है।

हम अपनी नासमझी के कारण अपने मानवीय व्यक्तित्व जो कि हमें मोक्ष के साधन के रूप में प्राप्त हुआ थाह्वह्वको अपने बन्धन का कारण बना लेते हैं, क्योंकि हम उसके तुच्छ भौतिक पक्ष से ही अपनी पहचान बनाये रखते हैं, राजकुमार सिद्धार्थ की भाँति अपने भीतर नहीं उतरते। उसने जब देखा और समझा कि सब-कुछ निस्सार है, क्षणभंगुर है, परिवर्तनशील है, प्रतिक्षण अदृश्य होता हुआ केवल प्रतीति मात्र है, उसने एक महान् कदम उठाया। उसे भी अनेक समस्याओं और प्रलोभनों का सामना करना पड़ा था। किन्तु जिस प्रकार समुद्री जहाज के चालक का दिक्सूचक यन्त्र, भले ही समुद्र शान्त हो अथवा तूफान में हो, जहाज वायुवेग से उलट-पलट रहा हो, उसकी सुई सदा उत्तर की ओर ही रहती है, उसी प्रकार उसने हर दशा में अपना मन लक्ष्य पर ही दृढ़ रखा।

इसी प्रकार यदि आप अपने मानवीय व्यक्तित्व के भीतर, अपनी पहचान की जागरूकता की अन्तरतम अवस्था में, सदैव अपनी वास्तविकता में निवास करते रहते हैं, तब आपके लिए कोई भी बन्धन नहीं है, तब आप वर्तमान बद्ध अवस्था में प्रतीत होते हुए भी मुक्त अवस्था में हैं।

और यह प्रक्रिया धीरे-धीरे निरन्तर बनाये रखने वाली है, क्योंकि आध्यात्मिक क्षेत्र दस सहस्र जागरूकताओं का क्षेत्र है। क्योंकि पुराने संस्कार इतने गहरे जड़ पकड़े हुए हैं और व्यक्ति को इस प्रकार निरन्तर अजागरूकता की निद्रा में, भ्रान्तिपूर्ण चेतना की निद्रा में पीछे की ओर घसीटते रहते हैं कि उसे इसका सतत विपरीतीकरण करते रहना आवश्यक हो जाता है, जागरूकताओं को निरन्तर दोहराते रह कर सदा-सर्वदा विद्यमान होने वाले प्रभावपूर्ण वास्तविकता के देदीप्यमान प्रकाश में आना होता है, उस सत्य में आ जाना पड़ता है, जो इस विश्व का एकमात्र प्रकाशित सत्य है।

बन्धन नाम का कुछ भी नहीं है। मुक्तावस्था ही एकमात्र सत्य है। केवल यही भीतर-बाहर सब जगह सदा विद्यमान है, कण-कण में विद्यमान है, सर्वत्र केवल मोक्ष ही है, केवल प्रबोधन ही है; केवल परिपूर्णता, प्रशान्त चैतन्य की महान् अवस्था की ही सत्ता है; क्योंकि वही ब्रह्म है, वही ताओ है, और वही अनन्त सर्वव्यापक है।

भले ही अन्य कुछ भी अस्वीकार कर दिया जाये, अवास्तविक घोषित कर दिया जाये; किन्तु इसे सीमित मन के द्वारा भ्रमित करना असम्भव है। यह एक तथ्य है,

यह अस्तित्व की आधारशिला है। सचेतनता, जागरूकता, परिपूर्णता, आनन्द, सुख और धन्यता, यह अपरिवर्तनीय है। सत्ता का तथ्य और उस वास्तविक तथ्य में स्थित होनाह्ह्ह्यह जागरूकता बनायी रखनी होगी।

इसलिए हम जान लें कि हम दस सहस्र जागरूकताओं के देश में रह रहे हैं। क्योंकि यह जानना ही आध्यात्मिकता है। यही वास्तव में अध्यात्म है। और जो यहाँ और इसी देह में परम आनन्द प्राप्त करना चाहता है, उसके लिए यही आध्यात्मिक जीवन होना चाहिए।

जागरूकता सत्य है। जागरूकता के लिए ही आप बने हैं। यही सदा विद्यमान अनुभूति है, जो भीतर-बाहर, सर्वत्र है। इसकी क्षमता सबमें है। आप सौभाग्यशाली हैं, जिन्हें पूर्ण सुअवसर प्राप्त है कि इस क्षमता को सुस्पष्ट, प्रत्यक्ष रूप से अपनी निजी अनुभूति बना सकें।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

बालकों के लिए दिव्य जीवन :

दया का अपना पुरस्कार होता है

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

शिक्षक : अच्छा गोपाल! आज तुम अपनी नयी पोशाक में बड़े शानदार दिखायी दे रहे हो। आओ, यहाँ बैठो। आज तुम्हें एक नयी बात बताऊँगा। नीति-शास्त्र क्या है, जानते हो?

गोपाल : यह शब्द आज मैं पहली बार ही सुन रहा हूँ। यह तो मेरे लिए बिलकुल नया है, कृपया समझायें।

शिक्षक : मैं अभी समझाये देता हूँ। नीति-शास्त्र सदाचार का शास्त्र है। सदाचार यह बतलाता है कि मनुष्य को परस्पर तथा दूसरे प्राणियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। इस शास्त्र में वे क्रमबद्ध सिद्धान्त दिये गये हैं, जिन पर मनुष्य को चलना चाहिए। नीति-शास्त्र न हो, तो मनुष्य इस संसार में अथवा अध्यात्म-मार्ग में कुछ भी प्रगति नहीं कर सकता। नीति-शास्त्र नैतिकता है। जो व्यक्ति शुद्ध नैतिक जीवन बिताता है, वह शाश्वत शान्ति पाता है। नीति-शास्त्र के अनुसार व्यवहार करने से तुम अपने पड़ोसियों, परिवार के लोगों, साथियों और सभी लोगों के साथ मेल-मिलाप से रह सकोगे।

कृष्ण : सदाचार क्या है गुरु जी? क्या आप बताने की कृपा करेंगे? मैं ठीक-ठीक नहीं जानता हूँ।

शिक्षक : बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। मैं जरूर बताऊँगा। ऐसा काम कभी नहीं करना चाहिए, जिससे दूसरों का भला न होता हो, या जिसके लिए बाद में पछताना या लज्जित होना पड़े। इनके बजाय ऐसे काम करने चाहिए, जिनके लिए आगे चल कर सब लोग तुम्हारी प्रशंसा करें। प्रशंसनीय और अपना तथा दूसरों का भला करने वाले काम ही हमेशा करने चाहिए। यह सदाचार का संक्षिप्त विवरण है।

गोपाल : व्यवहार, चरित्र और सदाचारह्नह्नये शब्द प्राय: सुनने में आते रहते हैं। इनसे भ्रम हो जाता है। क्या इनका एक ही अर्थ है?

शिक्षक : ओह, तुमने तो प्रश्न पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी!

गोपाल : गुरु जी, आप तो ज्ञान की खान हैं।

शिक्षक : तो उसे पूरा खाली करके ही छोड़ने का इरादा है शायद!

(सब खिलखिला कर हँस पड़ते हैं।)

खैर, तुम लोगों की शंका का समाधान करना ही होगा।

हम व्यक्तिगत रूप से एक-दूसरे के साथ नित्य-प्रति के जीवन में जो बर्ताव करते हैं, उसे व्यवहार कहते हैं।

मनुष्य में जितने सद्गुण हैं, उन सबको मिला कर चरित्र कहते हैं। चरित्र से ही मनुष्य शक्तिशाली और तेजस्वी होता है। लोग कहते हैं कि 'ज्ञान ही शक्ति है', पर मैं पूरे जोर के साथ कहता हूँ कि 'चरित्र ही शक्ति है'। चरित्र के बिना ज्ञानार्जन करना असम्भव है। चरित्रहीन व्यक्ति इस संसार में मृतप्राय है। समाज उसे तिरस्कार और उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। यदि तुम अपने जीवन में सफल होना चाहते हो, दूसरों को प्रभावित करना चाहते हो, सांसारिक और आध्यात्मिक मार्गों में प्रगति करना चाहते हो, तो तुम्हारा चरित्र निष्कलंक होना चाहिए। शंकराचार्य, बुद्ध, ईसा और प्राचीन ऋषियों को आज भी याद किया जाता है; क्योंकि उनका चरित्र दिव्य और अद्भुत था। वे लोग अपने चरित्र-बल से ही दूसरों को

प्रभावित और उनके हृदय को परिवर्तित कर सके। चरित्र जीवन का स्तम्भ है। मनुष्य का चरित्र उसके व्यवहार का परिचय देता है अथवा यों भी कहा जा सकता है कि 'मनुष्य के नित्य जीवन का व्यवहार उसके चरित्र को प्रकट करता है'।

आचार-शास्त्र में जिस सद्-व्यवहार का वर्णन है, नैतिक जीवन और कर्तव्य-पालन की चर्चा है, वही सदाचार कहलाता है।

सत्य बोलना, अहिंसा का आचरण करना, दूसरों को मन, वाणी अथवा कर्म से कष्ट न देना, किसी के प्रति क्रोध न प्रकट करना, दूसरों की निन्दा अथवा बुराई न करना और सबमें ईश्वर का दर्शन करना सदाचार है।

राम : तो चरित्र ही महान् आत्म-शक्ति है।

शिक्षक : हाँ, वह सुन्दर फूल के समान है, जो चारों ओर अपनी सुगन्ध फैलाता है। सद्गुणों तथा अच्छे चरित्र वाले व्यक्तियों का व्यक्तित्व अद्भुत होता है। कोई कलाकार हो सकता है, कुशल संगीतकार हो सकता है, योग्य कवि या महान् वैज्ञानिक हो सकता है; लेकिन यदि उसका चरित्र शुद्ध नहीं है, तो समाज में उसको समुचित स्थान नहीं मिलेगा। लोग उसको दुतकारेंगे। चरित्रवान् व्यक्ति को दयालु, कृपालु, सत्यनिष्ठ, क्षमाशील और सहिष्णु होना चाहिए। उसमें ये सभी गुण होने चाहिए।

जो व्यक्ति जान-बूझ कर असत्य बोलता है, दूसरों की भावना को चोट पहुँचाता है, उसे दुश्चरित्र कहते हैं। हर एक को इस बात का प्रयत्न करना चाहिए कि उसका चरित्र शुद्ध और निष्कलंक हो।

गोपाल : शुद्ध और निष्कलंक चरित्र वाले व्यक्ति के लक्षण क्या हैं?

शिक्षक : बड़े कठिन प्रश्न पूछ रहे हो। चरित्रवान् व्यक्ति में जो गुण होने चाहिए, वे असंख्य हैं। उन सबको सुनते-सुनते तुम थक जाओगे। फिर भी कुछ खास-खास गुण बताता हूँहृहृजैसे नम्रता, मन, वाणी और कर्म से अहिंसा-पालन, आत्म-निग्रह, निर्भयता, दानशीलता, दृढ़ इच्छा-शक्ति, शालीनता, अक्रोध, निरहंकार, शुचिता, प्राणिमात्र के प्रति करुणा।

राम! क्या तुम बता सकते हो कि किसी की हत्या या हिंसा क्यों नहीं करनी चाहिए? पड़ोसी से क्यों प्रेम करना चाहिए?

राम : थोड़ा समय दीजिए, सोच कर बताता हूँ।

(थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहता है।)

क्योंकि ईश्वर एक है और सभी प्राणी उसके ही रूप हैं, उसकी ही सृष्टि हैं। सबमें एक ही आत्मा है। अतः दूसरे को पीड़ा देना अपने को पीड़ा देने जैसा है।

शिक्षक : खूब! बिलकुल ठीक। तुम समझदार हो।

गोपाल : गुरु जी। कहानी के लिए बहुत थोड़ा समय रह गया है, मैं एक सुना दूँ।

शिक्षक : अच्छी बात है। समय पर तुमने कहानी की याद दिला दी। ठीक है, सुनाओ।

गोपाल : एक बार एक मालिक अपने गुलाम के साथ बहुत बुरा बर्ताव करने लगा। गुलाम का नाम था एन्ड्रोकिल्स। मामूली अपराध के लिए भी चाबुक से उसकी पिटाई करता। उसे आधा पेट भूखा रखता। इन कष्टों से गुलाम बहुत तंग आ गया और एक दिन जंगल की ओर भाग गया।

वहाँ पौधों की झुरमुट में उसने किसी की कराह सुनी। वह उस ओर गया और वहाँ एक शेर को कराहते हुए देखा। शेर अपना एक पंजा उठा कर दिखा रहा था। उस पंजे में एक मोटा काँटा चुभा था। वह गुलाम उसके पास गया और काँटा निकाल दिया, फिर कपड़े के एक टुकड़े से पट्टी बाँध दी। शेर को आराम मिला। वह ऐन्ड्रोकिल्स के पैरों पर लोट गया। फिर पूँछ हिलाते हुए कुत्ते की तरह

उसका हाथ चाटने लगा। वे दोनों मित्र बन गये और एक ही गुफा में रहने लगे।

कुछ महीनों बाद मालिक ने उस गुलाम को पकड़ लिया और उसे राजा के पास ले गया। राजा ने आदेश दिया कि गुलाम को भूखे शेर के सामने फेंक दिया जाये। इसके लिए एक दिन निश्चित किया गया। शेर और गुलाम ऐन्ड्रोकिल्स की लड़ाई देखने के लिए हजारों लोग इकट्ठा हुए। बेचारे गुलाम को एक पिंजरे में बन्द कर दिया गया और उसी में शेर को छोड़ दिया। शेर जोर से गर्जा और उसकी ओर लपका। लेकिन गुलाम के समीप जाते ही उसने अपने पुराने दोस्त को पहचान लिया। शेर फौरन उसके पैरों पर गिर पड़ा और पूँछ हिलाते हुए उसका हाथ चाटने लगा। यह आश्चर्य देख कर राजा और प्रजा सब चकित रह गये।

राजा ने गुलाम को पास बुलाया। गुलाम ने शेर के साथ अपनी मित्रता की सारी कहानी कह सुनायी। सुन कर राजा बहुत खुश हुआ और गुलाम तथा शेर दोनों को आजाद कर दिया।

शिक्षक : बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद कहानी है। बच्चो, देखो। 'दया का अपना पुरस्कार होता है।' दयालु लड़की की कहानी जानते हो?

लड़के : जी नहीं। आपने उसे सुनने की हमारी उत्सुकता जगा दी। वह कहानी भी गुलाम की कहानी जैसी ही दिलचस्प होगी।

शिक्षक : एक रेलगाड़ी एक जंगल से हो कर जा रही थी। शाम हो चली थी, रेलवे लाइन के दोनों ओर हरे-भरे खेत थे। खेतों में कई स्त्री, पुरुष, बालक काम कर रहे थे। एक लड़की नदी के पुल के पास जानवर चरा रही थी।

उस दिन खूब वर्षा हुई थी। नदी में पानी चढ़ा हुआ था। उससे किनारे कट गये थे। नदी का पुल पुराना था और एक तरफ से टूट गया था। नदी का रेतीला किनारा बह गया था। लड़की यह जानती थी। रेलगाड़ी आने का समय था। गाड़ी को पुल पार करना था। लड़की ने सोचा कि कुछ हो गया, तो कई लोगों के प्राण जायेंगे। वह इंजन को कैसे रोके? उसके मन में तुरन्त एक विचार आया। गाड़ी तेजी से आ रही थी। एक सेकेण्ड भी रुका नहीं जा सकता था। जहाँ पुल टूटा था , वहाँ दौड़ कर गयी। अपनी साड़ी को हाथ में ले कर अपने शिर के ऊपर हिलाने लगी।

चालक ने लाल झण्डी देखी। इतने में गाड़ी आधा पुल पार कर गयी। चालक ने बड़ी मुश्किल से गाड़ी रोकी। उसने खतरे वाली जगह देखी। गार्ड भी वहाँ आ गया। सब समझ गये कि कितना भयंकर खतरा था। सैकड़ों लोगों के प्राण बच गये।

कृष्ण : वाह! बड़ी वीर लड़की थी। उसने बड़ा अच्छा काम किया।

गोपाल : लड़की वास्तव में बड़ी बहादुर थी। उसमें हिम्मत और विश्व-प्रेम भरा था।

शिक्षक : देखो बच्चो! दया और सौजन्य का छोटा-सा भी काम हमारे हृदय को शुद्ध करता है और भागवती चेतना को अधिकाधिक जाग्रत करता है।

राम : मेरे दिमाग में उस मालिक और गुलाम ऐन्ड्रोकिल्स की कहानी घूम रही है। वह मालिक इतनी निर्दयता से क्यों व्यवहार करता था? उसे नौकरी से छुड़ा देता तो क्या काफी न था?

शिक्षक : बच्चो! एक जमाना था, जब मनुष्य भी पशुओं की तरह खरीदे और बेचे जाते थे। अमीर लोग उन्हें नौकर की तरह नहीं, गुलाम की तरह रखते थे। वे यदि मालिक की इच्छा के विरुद्ध कुछ भी करते थे, तो उनके साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया जाता था। उनके मामूली अपराध से ही मालिक का क्रोध भड़क जाता था। उन्हें जीवन-भर गुलामी करनी पड़ती थी। अमीर लोग उन्हें

खरीदते थे और उन्हें निजी सम्पत्ति मानते थे। इसलिए वे यदि भाग जाते थे, तो उन्हें खोज कर पकड़ा जाता था और कठोर दण्ड दिया जाता था।

गोपाल : यह बड़ी लज्जा की बात है कि बेचारे गुलामों के साथ ऐसा दुर्व्यवहार किया जाता था। ऐन्ड्रोकिल्स शेर के पास जाने का साहस कैसे कर सका गुरु जी?

शिक्षक : शेर पीड़ा से कराह रहा था और अपना पंजा उठा कर दिखा रहा था। ऐन्ड्रोकिल्स ने पंजे में चुभे हुए काँटे को स्पष्ट देख लिया। शेर बहुत सीधा-सादा दीख पड़ता था। उसे देख कर गुलाम का हृदय पसीज गया। इसलिए गुलाम साहसपूर्वक शेर के पास गया और उसने उसका पंजा अपने हाथ में ले कर काँटा निकाल दिया। शेर को आराम मिला और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उसने पूँछ हिलाना शुरू कर दिया।

कृष्ण : इतना भयानक शेर भी कैसे यूँ इतना सीधा बन गया गुरु जी?

शिक्षक : पशु भी बड़े भावुक होते हैं। उनके साथ जैसा व्यवहार किया जाता है, वे भी वैसा ही व्यवहार करते हैं। तभी तो हाथी, बाघ, कुत्ते आदि कई हिंसक पशु भी पालतू बना लिये जाते हैं और उनको काम भी सिखाया जाता है।

अल्पाइन के रेड-क्रास कुत्तों के बारे में तुमने सुना है?

कृष्ण : जी नहीं। उनके तथा उनके काम के बारे में जानने का कुतूहल पैदा हो गया है गुरु जी।

शिक्षक : सचमुच ही वह बात जानने योग्य है।

स्विट्ज़रलैण्ड के आल्पस पर्वत में जो लोग बर्फ में खो जाते हैं, उनकी तलाश करने तथा उनकी रक्षा करने की शिक्षा वहाँ के सेंट बर्नार्ड कुत्तों को दी जाती है। रेड-क्रास कुत्ते लड़ाइयों में ऐम्बुलेन्स की टोली की मदद करते हैं। प्रत्येक रेड-क्रास कुत्ते के गले में एक छोटी थैली बँधी होती है, जिसमें मरहम-पट्टी करने का सामान होता है और ब्राण्डी की छोटी बोतल भी रहती है। कुत्ते को जब कोई ऐसा घायल व्यक्ति दिखायी देता है, जो स्वयं अपना थोड़ा-बहुत उपचार कर सकता हो, तो कुत्ता उसके पास जा कर तब तक खड़ा रहता है जब तक कि वह अपने घाव पर पट्टी बाँध नहीं लेता। यदि वह व्यक्ति इतना घायल होता है कि स्वयं कुछ भी नहीं कर पाता, तो कुत्ता उसके पास खड़ा हो कर भौंकने लगता है। उसका भौंकना सुन कर स्ट्रेचर से ढोने वाले लोग आ जाते हैं और उस व्यक्ति को उठा कर युद्ध के मैदान से बाहर प्राथमिक उपचार-गृह में ले जाते हैं।

कृष्ण : यह तो बहुत आश्चर्य की बात है कि कुत्ते भी ऐसा मानवीय कार्य करते हैं।

गोपाल : गुरु जी, आज के दिन काफी समय तक बड़ी दिलचस्प बातें होती रही हैं। हमें खेद है कि हमने आपको बहुत समय तक रोक लिया और प्रश्नों की झड़ी लगा कर आपको परेशान कर दिया।

शिक्षक : कोई बात नहीं। ऐसे जिज्ञासा-भरे प्रश्नों का उत्तर देने में मुझे बड़ी खुशी होती है। तुम-जैसे जिज्ञासु विद्यार्थियों को पा कर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे!

लड़के : बहुत-बहुत धन्यवाद गुरु जी।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

ईश्वर ने आपको दो आँखें और दो कान दिये हैं; परन्तु जिह्वा एक ही दी है। इसका यही अर्थ है कि आप अधिक देखें तथा सुनें और कम बोलें। वाणी मानवी है; परन्तु मौन दिव्य है। मौन ब्रह्म है। **स्वामी शिवानन्द**

योग द्वारा स्वास्थ्य :

मकरासन

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

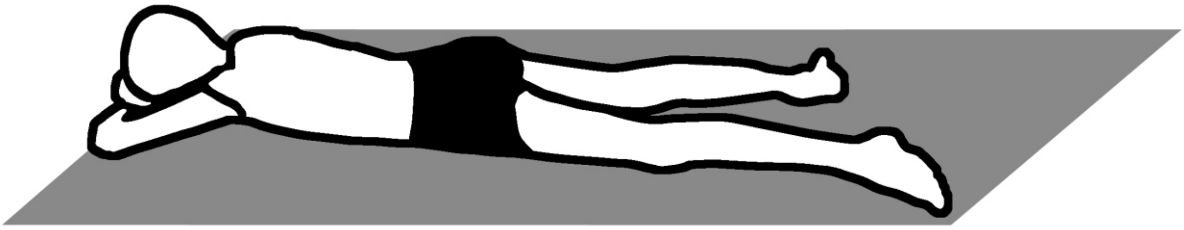

विधि

अधोमुख हो कर फर्श पर लेट जायें। भुजाओं को दायें-बायें (आर-पार) बाँध कर शिर के नीचे रखें। हथेलियाँ कन्धों पर स्थित हों। पैरों को जितना भी अधिक सम्भव हो सके, तानें। पैरों की उँगलियाँ बाहर की ओर हों। सामान्य श्वास-प्रश्वास के साथ इस आसन में दो से तीन मिनट तक विश्राम करें।

लाभ

जिन मांसपेशियों पर अधिक श्रम पड़ा हो, उन्हें विश्राम और शिथिलीकरण की आवश्यकता होती है। एकमात्र मकरासन ही इन मांसपेशियों को सुनिश्चित रूप से त्वरित और कुशलतापूर्वक पूर्ण विश्राम और आराम प्रदान करता है।

(अनुवादक : श्री शिवगोविन्द गुप्त)

दान

हमारी दूसरों को कुछ देने की प्रवृत्ति 'दान' है। कुछ मुद्राएँ, रुपये, डालर आदि दे देना मात्र 'दान' नहीं कहलाता। 'दान' एक मानसिक अभिवृत्ति है जो शारीरिक क्रियाओं द्वारा प्रकट भी होती है और अप्रकट भी रह सकती है। इसमें दूसरों के प्रति दान की भावना, दान की अभिवृत्ति, आचरण और व्यवहारह्लह्लसब आ जाता है। दूसरों की परिस्थिति से सहानुभूति रखने की क्षमता भी 'दान' है। जब आपमें इतर जीवों और व्यक्तियों की भावनाओं में, उनकी वास्तविक दशा और स्थितियों में प्रवेश करने की क्षमता आ जाती है और जैसा वे अनुभव करते हैं, वैसा ही आप अन्तर से अनायास ही विचारने लग जाते हैं तथा जो वे करते हैं, वैसा ही करने लग जाते हैं तो यह स्थिति आपके स्वभाव में निहित दानशीलता के गुण की अभिव्यंजक होगी। यह 'दान' कहलाता है। **स्वामी कृष्णानन्द**

पूर्व-अंक का शेष :

वैराग्य-शतक का सार

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

अज्ञानी वे हैं जो सोचते हैं कि उनके पास वह सब-कुछ हो, जिसमें सच्चा सौभाग्य सन्निहित है जैसेह्नह्नबड़े-बड़े भवन हों, पढ़े-लिखे पुत्र हों, टनों सोना हो, पत्नी के रूप में एक सुन्दर तरुणी पत्नी हो तथा उनका स्वास्थ्य उत्तम हो। इन सबके लिए वे सांसारिकता की जेल में जाने के लिए दौड़े चले जा रहे हैं; जब कि सच्चे सौभाग्यशाली तो वे हैं, जिन्होंने इस संसार को, इसके सुखों को उनकी क्षणभंगुरता के कारण त्याग दिया है।

यही कारण है कि हिमालय और गंगा के किनारे नष्ट हो रहे हैं। यह बेशर्म आदमी सम्पत्ति, स्त्री और शराब के पीछे भाग रहा है! यही कारण है कि हिमालय पर्वत पर प्राप्त होने वाली जड़ी-बूटियाँ अब नहीं मिलतीं, फलदार वृक्ष भी नष्ट हो गये हैं, क्योंकि मनुष्य सदा सांसारिकता के दलदल में फँसे रहना चाहता है।

जागो, हे अज्ञानी मनुष्य, मेरे पास आओ। हम एकान्त गुफाओं की ओर चलें, जहाँ ऐसे अधम पुरुष का नाम भी न सुनायी दे। अब हम जँगली फल और मूल पर जीवन यापन करें, पवित्र गंगा के शीतल और ताजगी प्रदान करने वाले जल का पान करें तथा तृणों एवं लताओं के नरम बिस्तर पर सोयें। हम पहाड़ों की गुफाओं के पत्थर पर आसन लगायें और दिन-रात निरन्तर सर्वकरुणामय शिव का गहन ध्यान करें। अब हम सन्तोषपूर्ण एवं शान्तिपूर्ण जीवन बितायें। लालच तथा लोभ दुर्भाग्यपूर्ण होते हैं। यहाँ तक कि यदि महामेरु पर्वत के वजन के बराबर स्वर्ण भी मुझे प्रस्तुत किया जाये, तो भी मैं इसे स्वीकार नहीं करूँगा।

सांसारिक जीवन में सदैव भय रहता है, जब कि संन्यास ही एकमात्र मनुष्य को निर्भय बनाता है।

जन्म को मृत्यु के द्वारा, यौवन को वृद्धावस्था द्वारा, सन्तोष को लोभ के द्वारा, आत्म-संयम का आनन्द तरुणी स्त्री के छल के द्वारा, ईर्ष्यालु पुरुष द्वारा सद्गुण, धूर्त मन्त्रियों के द्वारा राजा को तथा शक्ति को स्वयं इसकी अनित्यता के कारण खा लिया जाता है। मुझे बताइए, इस पृथ्वी पर ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसे किसी अन्य के द्वारा नहीं खाया गया?

मनुष्यों के स्वास्थ्य को अनेक शारीरिक और मानसिक रोगों से भय है, सम्पत्ति को लुटेरों से भय है तथा जो भी जन्मा है, उसे बार-बार मृत्यु द्वारा ले जाये जाने का भय है। सुख क्षणिक है। जीवन छोटा है और यौवन का आनन्द व्यक्ति की प्यास बुझाने हेतु अत्यन्त कम है। अरे! यह संसार असत्य है। ईश्वर ही एकमात्र सत्य है। सांसारिक सुखों के प्रति कामना को त्याग दें और आत्मज्ञान प्राप्त करें।

जब आपने एक अपवित्र गर्भ में से जन्म लिया है, आप यौवनावस्था में इन्द्रिय-सुखों तथा मानसिक विचलनों से प्रदूषित होते हैं तथा वृद्धावस्था में कामुक स्त्री के लिए हँसने का साधन बन जाते हैं, तो आप यह कहने का कैसे साहस करते हैं कि संसार में सुख है?

(समाप्त)

(अनुवादिका : शिवानन्द राधिका अशोक)

पूर्व-अंक से आगे :

स्वप्न और सुषुप्ति का रहस्य : हिरण्यगर्भ

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

निस्सन्देह जाग्रत अवस्था स्वप्नावस्था से श्रेष्ठतर हैह्नह्नइस चित्त-विकार को किंचित् दूर रख कर जब हम इन दो अवस्थाओं का निरीक्षण करते हैं, तो हम पूर्ण रूप से चकित कर देने वाले परिणाम पर पहुँचते हैं। ऐसा क्यों कहा जाता है कि जाग्रत अवस्था के विषय सत्य हैं? क्योंकि उन विषयों का मूल्यांकन हम उपयोगिता में करते हैं। जाग्रत अवस्था का भोजन जाग्रत की क्षुधा शान्त कर सकता है, स्वप्न का भोजन नहीं। इसी कारण से हम कहते हैं कि स्वप्न का भोजन सत्य नहीं है। हम यह क्यों भूल जाते हैं कि स्वप्नावस्था का भोजन स्वप्न की क्षुधा को शान्त करता है? दो अवस्थाओं की तुलना हम अयथार्थ रूप से क्यों करते हैं? स्वप्न का भोजन तो हम स्वप्न में ही निबद्ध कर देते हैं और तुलना करते हैं स्वप्न-क्षुधा की जाग्रत-क्षुधा से। वह भी सूक्ष्मरूपेण नहीं, प्रत्युत किसी विषय अथवा भोजन आदि को ले कर। यदि हम कहते हैं कि हम जाग्रत अवस्था में लोगों को देखते हैं और उनसे बातचीत अथवा व्यवहार कर सकते हैं, तो क्या स्वप्न में हम स्वप्न के लोगों से उसी भाँति संलाप और व्यवहार नहीं करते? स्वप्न के मित्र से हम हाथ मिलाते हैं, स्वप्न के शत्रु से हम लड़ाई कर सकते हैं, और तो और स्वप्न के युद्ध में हम स्वप्न की मृत्यु का अनुभव भी कर सकते हैं। स्वप्न में कोर्टकेस भी देख सकते हैं। 'केस' जीतने पर स्वप्न की धनराशि भी प्राप्त कर सकते हैं। सम्भव है, स्वप्न में हम एक उच्च पदाधिकारी के रूप में किसी कार्यालय में कार्यरत हों। हम स्वप्नलोक में राजा हो सकते हैं। जागृति में हो अथवा स्वप्न में, दोनों अवस्थाओं में लोक-व्यवहार जब समान है, तो भेद क्या है दोनों अवस्थाओं में? आप किस आधार पर स्वप्न जगत् को असत् और जाग्रत जगत् को सत्य मानते हैं? आपके द्वारा की गयी तुलना न्यायसंगत नहीं है। आप दोनों पक्षों के एक अच्छे 'जज' (न्यायाधीश) नहीं हैं, इसीलिए तो आप एकपक्षीय न्याय करते हैं और अन्य पक्षों की ओर आपका ध्यान भी नहीं जाता। किन्तु माण्डूक्योपनिषद् एकपक्षीय सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करता। आपको निष्पक्ष भाव से विषय के मूल में पहुँचना है। स्वप्न और जाग्रत दोनों अवस्थाओं का विरक्त भाव से अवलोकन करना है। एक दार्शनिक ने बहुत सुन्दर बात कही है। मान लें कि एक जाग्रत अवस्था का राजा स्वयं को स्वप्न में प्रतिदिन बारह घण्टे भिखारी के रूप में देखता है और इसी प्रकार एक भिखारी स्वयं को बारह घण्टे तक राजा के रूप में देखता है, तो दोनों में अन्तर क्या है? राजा कौन है और भिखारी कौन है? आपके अनुसार जाग्रत अवस्था का राजा ही वास्तविक राजा है। पुन: आप एक असत् तुलना कर रहे हैं। इस तुलना का कोई आधार नहीं है; क्योंकि लिया गया निर्णय पक्षपात से रहित नहीं है, अविचारमति है। इसमें केवल एक पक्ष का आधार निहित है। वह जागरित मन ही है जो जाग्रत जगत् को सत्य मान रहा है। दो पक्षों में एक पक्ष कह रहा हैह्नह्न''मैं सत्य हूँ।'' इसमें दूसरे पक्ष के अधिकारों की उपेक्षा हो रही है। स्वप्नद्रष्टा भी अपने स्वप्नलोक के विषय में ऐसा ही निर्णय ले सकता है और उसी को सत्य प्रमाणित कर

सकता है। आपने स्वप्नलोक को मिथ्या इसलिए कह दिया, क्योंकि आप जाग गये हैं। स्वप्न में तो आप ऐसी निर्धारणा कदापि नहीं कर सकते। स्वप्न में तो आप प्रमुदित हैं, प्रसन्न हैं। आपने स्वप्न में हास भी किया और रुदन भी। यदि स्वप्निल दु:ख असत्य है, तो आप स्वप्न में रुदन क्यों करते हैं? आप सोच सकते हैंह्नह्न''मैं चिन्ता क्यों करूँ, यह तो स्वप्न है? आपने स्वप्न में सर्प देखा और कूद पड़े (छलाँग लगा ली), क्यों? स्वप्न का ही तो सर्प था न? यह तो असत् है। पुन: यह शरीर में प्रकम्पन क्यों? स्वप्न में शेर ने आक्रमण कर दिया, तो स्वेद युक्त शरीर लिये आप जाग उठते हैं। सम्भव है, आप क्रन्दन भी कर लें। स्वप्न में आप किसी वृक्ष से नीचे गिरे, आपकी टाँग टूट गयी और आप वास्तविक वेदना का अनुभव करें, यह भी सम्भव है। यदा-कदा ऐसा भी होता है कि जागने पर टाँगें काँप रही हैं और स्पर्श के द्वारा यह ज्ञात करने का प्रयास कर रहे हैं कि वस्तुत: हुआ क्या है। कुछ समय के पश्चात् पूर्णत: जागृति आने पर आप कहते हैंह्नह्न''ओह! मैं तो स्वप्न देख रहा था।'' **(क्रमश:)**

(अनुवादिका : श्रीमती गुलशन सचदेव)

केवल भारत में लागू

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के सदस्यता-शुल्क की एवं शाखाओं के सम्बद्धता-शुल्क की दरें

१. नवीन सदस्यता-शुल्क . . . . रु. १५०/-
- प्रवेश-शुल्क . . . . रु. ५०/-
- सदस्यता-शुल्क . . . . रु. १००/-

२. सदस्यता नवीकरण-शुल्क (वार्षिक) . . . . रु. १००/-

३. नयी शाखा खोलने का शुल्क* . . . . रु. १०००/-
- प्रवेश-शुल्क . . . . .रु. ५००/-
- सम्बद्धता-शुल्क . . . . .रु. ५००/-

४. शाखा-सम्बद्धता (नवीकरण) शुल्क (वार्षिक) . . . . रु. ५००/-

५. आजीवन सदस्यता-शुल्क . . . . रु. ३,०००/-

६. संरक्षकता-शुल्क . . . . रु. १०,०००/-

⇨ कृपया सदस्यता-शुल्क और शाखा-सम्बद्धता-शुल्क इंडियन पोस्टल आर्डर अथवा ऋषिकेश में स्थित किसी भी बैंक के नाम बने डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

* नयी शाखा खोलने के लिए मुख्यालय से लिखित अनुमति लेनी होगी।

बाल-स्तम्भ

लाखों-करोड़ों में एक

स्वामी रामराज्यम्

मैं उस बूढ़े बाबा की कब्र पर जा कर बहुत देर तक खड़ा रहा, गुमसुम-सा। फिर कब्र की मिट्टी उठा कर मैंने माथे पर लगा ली।

\+ + +

उस बूढ़े बाबा को साँप का विष उतारना आता था। कभी वह मन्त्र पढ़ कर विष उतारता था, कभी अपने मुँह से विष चूस कर। साँप के काटने का समाचार सुन कर वह भागता था रोगी को ठीक करने के लिए। जब तक रोगी ठीक नहीं हो जाता था, पानी एक बूँद भी मुँह में नहीं डालता था। उसने मुझे बताया था कि एक बार एक डाक्टर के बेटे का सर्प-विष उतारने के लिए वह दस घण्टों तक उसके पास बैठा रहा था। और वह डाक्टर कौन था? उस डाक्टर ने दो वर्ष पहले उसके मरते हुए पोते की ओर से निगाह फेर ली थी, क्योंकि उसे सिनेमाघर जाने की देर हो रही थी!

राम बाबू पटेल नाम के एक व्यक्ति से उस बूढ़े बाबा का परिचय था। पटेल एक स्कूल के क्वार्टर में रहता था और बूढ़े बाबा की झोपड़ी उस स्कूल के पास ही थी। बूढ़ा बाबा रोज ही पटेल से मिलने चला जाया करता था। एक दिन पटेल ने उस पर चोरी का अभियोग लगा कर भगा दिया। अभियोग झूठा था। झूठ की मार खा कर बूढ़ा बाबा तिलमिला उठा और रोता हुआ अपनी झोपड़ी में वापस आ गया। फिर उसने पटेल को अपने मन से निकाल ही दिया।

एक रात की बात है। पटेल अपने कमरे में चारपाई पर लेटा हुआ था। आसपास कोई नहीं था। किसी काम से वह उठा। नीचे पड़ी चप्पलों में उसने पैर डाला ही था कि किसी ने पैर में जोर से काट लिया। उसने पैर उठा लिया। टार्च जला कर देखा तो उसे चप्पलों के पास एक काला साँप दिखायी पड़ा। अब उसे उस बूढ़े बाबा की याद आयी जिस पर उसने चोरी का अभियोग लगाया था। वह जोर से चिल्लायाह्नह्न''बूढ़े बाबा, आओ, जल्दी आओ। मुझे साँप ने काट लिया है।''

थोड़ी देर बाद बूढ़ा बाबा स्कूल के फाटक के पास आ कर खड़ा हो गया और आवाज लगायीह्नह्न''पटेल, क्या तुमने मुझे पुकारा था!''

''हाँ, हाँ, जल्दी आओ।''

''लेकिन मैं तो चोर हूँ, कैसे आऊँ?''

''बाबा, पुरानी बातें भूल जाओ। मुझे माफ करो। जल्दी आओ।''

बूढ़ा बाबा अन्दर आया। टार्च की रोशनी में उसने पैर पर साँप के काटने का निशान देखा और बोलाह्नह्न''हाँ, विषैले साँप ने काटा है।''

फिर उसने टार्च जला कर साँप को ढूँढ़ने की कोशिश की। साँप जा चुका था। कमरे में नहीं था।

तब तक पटेल आधा बेहोश हो कर चारपाई पर गिर गया था।

इस बीच पटेल की आवाज सुन कर आठ-दस लोग आ गये।

बूढ़े बाबा ने दो-चार सेकेंड तक कुछ सोचा, फिर वह झट काटे हुए स्थान पर मुँह लगा कर विष चूसने लगा। आठ-दस बार विष चूस-चूस कर उसने फर्श पर थूका। पटेल ने आँखें खोल दीं। बूढ़ा बाबा जल्दी से उठ खड़ा हुआ। बोलाह्ह''विष चूसने के बाद जो दवा पी जाती है, वह झोपड़ी में है। मैं चला।''

वह तुरन्त चला गयाह्हलगभग भागता हुआ।

एक व्यक्ति बोलाह्ह''मैं पहुँचा कर आता हूँ बूढ़े बाबा को उसकी झोपड़ी में।''

थोड़ी देर बाद उस व्यक्ति की आवाज सुनायी पड़ीह्ह''दौड़ो, दौड़ो, बाबा तो गये।''

सब लोग भागे।

बूढ़ा बाबा अपनी झोपड़ी तक नहीं पहुँच पाया था। रास्ते में ही गिर गया था। उसका शरीर विष के प्रभाव से नीला पड़ गया था। उसके अन्तिम शब्द, जो उसके पीछे-पीछे आये हुए व्यक्ति ने सुने थे, ये थेह्ह'ख़ुदा पटेल पर रहम करे, सब पर रहम करे।'

\+ + +

बूढ़े बाबा की कब्र पर मैंने एक पत्थर लगवा दिया और उस पत्थर पर ये शब्द लिखवा दियेह्ह

बूढ़े बाबा! तुम्हारे-जैसे इंसान जल्दी-जल्दी इस धरती पर नहीं आते।

बच्चो, तुम्हारी दृष्टि में वह बूढ़ा बाबा कैसा व्यक्ति था? क्या एक बुद्धिहीन व्यक्ति जो उस पर चोरी का झूठा अभियोग लगाने वाले के लिए व्यर्थ ही अपने प्राण गँवा बैठा? क्या एक महान् व्यक्ति जिसने उसका अहित करने वाले के लिए भी जान की बाजी लगा दी और उसके कल्याण की कामना करता हुआ इस संसार से विदा हुआ? मैं तो कहूँगा कि वह एक ऐसा इंसान था जिसकी कीमत आँकना सरल नहीं है। वह था लाखों-करोड़ों में एक।

मन का नाश

यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि जन्म-मृत्यु का यह बन्धन मन को वश में करके ही तोड़ा जा सकता है, अन्यथा कोई उपाय नहीं है। बिना क्लेश या संकट के माया का बन्धन काटे जाने का यही उपाय है अर्थात् मन के नाश वाला उपाय। आप मन का नाश करें और सुखी हों।

मोक्ष से मन के विकारों का नाश ही अभिप्रेत है। यदि आपका मन निर्विकार और पवित्र है, तो समझ लीजिए कि आपने जन्म-मृत्यु का पाश विच्छिन्न कर दिया है। पूरे अध्यवसाय के साथ मन को अपने वश में करने में लग जाना चाहिए। यह कोई रोज-दो-रोज का काम नहीं है। इसमें लम्बी साधना की आवश्यकता है। मनोविजय या आत्मविजय एक ही बात है। इसके द्वारा आप परमानन्द-पद को प्राप्त कर सकते हैं।

स्वामी शिवानन्द

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

शिवानन्द होम में सेवा-सुश्रूषा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय का शिवानन्द होम गरीब व जरूरतमन्दों की सेवा करने का साधन रहा है, ये ऐसे लोग हैं जिनको दवा इलाज (चिकित्सा) की आवश्यकता है, जिनके पास कोई भी साधन नहीं है, जिनकी कोई भी व्यक्ति सहायता नहीं करता है, कोई घर नहीं है, उनकी कोई देखभाल करने वाला कोई भी नहीं है, जिनको समाज ने तिरस्कृत कर दिया है।

यद्यपि कुष्ठरोग अर्थात् कोढ़ का अब पूरी तरह इलाज सम्भव है तो भी मल्टी ड्रग थैरेपी (एम. डी. टी.) के पूरा कोर्स करने के बाद भी कई मरीजों को अपना शेष जीवन शारीरिक विकलांगता व कुरूपता, शरीर में संवेदनहीनता से व्यतीत करना पड़ता है। जब उनके शरीर में घाव या फोड़ा होता है तो उन्हें कुछ भी दर्द या संवेदना नहीं होती है। ऐसी स्थिति में वे डाक्टर की सलाह लेने व इलाज कराने का प्रयत्न नहीं करते हैं।

शिवानन्द होम में भर्ती किये गये अधिकांश कोढ़ी ऐसी स्थिति में यहाँ आये जब उनके उँगलियों, अँगूठों, पैरों तथा आँखों की मांसपेशियाँ पूर्णतः क्षत-विक्षत हो चुकी हैं अतः अब उनका इलाज सम्भव नहीं है, फलस्वरूप अन्धापन, अंगहीनता, हाथ-पाँवों में फोड़े-फुन्सियाँ हो जाती हैं। कोढ़ का रोगी गरम चाय के गिलास की गर्मी को नहीं महसूस करता है, एक क्षण की भूल से शरीर में जलकर गम्भीर घाव हो जाते हैं, क्योंकि दर्द के महसूस होने पर ही इससे दूर हटने की प्रतिक्रिया होती है। इस मास होम में चार नये कुष्ठरोगियों को भर्ती करके इलाज आरम्भ किया गया, दो को डिस्चार्ज किया गया और उनका इलाज ओ. पी. डी. से जारी रखा गया।

शिवानन्द होम नियमित रूप से एम. डी. टी. इलाज की सुविधा देता है स्वास्थ्य शिक्षा, व्यायाम, घावों को ठीक करने हेतु जलचिकित्सा, नेत्र विशेषज्ञ से परामर्श व इलाज कराता है, घावों की सफाई व मरहमपट्टी एवं दवाइयों का वितरण करता है।

इस बीमारी का शारीरिक उपचार एक पहलू है, सदियों से कोढ़ की बीमारी से ग्रस्त मरीजों को घृणा की दृष्टि से देखा जा रहा है, उनको एक किनारे तिरस्कृत कर छोड़ दिया जाता है, वे समाज से अलग थलग पड़ जाते हैं तथा उनको अपमानित किया जाता है। यह कलंक कितना बड़ा भारी है, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। इससे मरीज के हृदय में गहरा घाव बन जाता है जो इस बीमारी से ग्रसित हैं, उनमें यह प्रायः स्पष्ट देखा जा सकता है।

करुणानिधान कृपालु भगवान् प्रत्येक पर कृपा करें चाहे वह पास हो या दूर, जो अकेला और दुःखी महसूस करता हो, जो दलित है, दुःखी है, आहत है, उन सब पर भगवान् दया करें! 'ॐ नमः शिवाय'।

''भले ही समस्त प्रकृति क्रोधित दृष्टि से तुमको कुचलना चाहती हो, तब भी हे मेरे आत्मस्वरूप! इस बात को जान लो कि तुम दिव्य हो! आगे बढ़ो, आगे बढ़ोह्हदायें-बायें नहींह्हसीधे लक्ष्य की ओर आगे बढ़ो।''

स्वामी विवेकानन्द

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

श्री राम नवमी महोत्सव

आश्रम मुख्यालय में सोमवार, १४ अप्रैल २००८ को भगवान् श्री राम का जन्म-जयन्ती उत्सव श्री राम नवमी अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया गया। आश्रम के अन्तेवासियों, अतिथियों और अभ्यागतों ने इससे एक सप्ताह पूर्व ही तारक मन्त्र 'ॐ श्री राम जय राम जय जय राम' का सामूहिक कीर्तन आरम्भ कर दिया था। इसके साथ ही २२ मार्च से १० अप्रैल तक श्री वाल्मीकि रामायण का 'मूल पारायण' भी किया गया।

विशेष महोत्सव प्रातः ५ बजे ब्राह्ममुहूर्त ध्यान सत्र से प्रारम्भ हुआ। ६ बजे गुरुदेव के समाधि मन्दिर से भव्य प्रभातफेरी आरम्भ हुई, जो श्री विश्वनाथ मन्दिर होती हुई गुरुदेव कुटीर, मुनिकीरेती और शिवानन्दनगर से पुनः आरती के पश्चात् श्री विश्वनाथ मन्दिर में सम्पूर्ण हुई।

प्रातः ८ बजे श्री विश्वनाथ मन्दिर के प्रांगण में एकत्रित हुए जहाँ सामूहिक भजन-कीर्तन का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। मन्दिर के गर्भगृह में भगवान् श्री राम, श्री सीता माता, लक्ष्मण और श्री हनुमान् जी के विग्रह मनोहारी पुष्प-सज्जा से सुशोभित हो रहे थे। वहीं पर वेद मन्त्रों के उच्चारण सहित अभिषेक किया जा रहा था जिसमें सभी भक्त जन भी क्रमशः भाग ले रहे थे। ११.४५ पर 'श्रीमद् वाल्मीकि रामायण' तथा तुलसी कृत श्री राम चरित मानस में से श्री राम-जन्म का अंश पढ़ा गया।

१२ बजे आरती सम्पन्न हुई और उसके बाद सभी ने निजी रूप से भगवान् को पुष्प अर्पित करके 'अन्नपूर्णा भवन' में प्रसाद ग्रहण किया।

रात्रि सत्संग में भगवान् श्री राम के भजन गाये गये तथा आश्रम के वरिष्ठ अन्तेवासी द्वारा श्री राम के 'जीवन चरित' पर प्रवचन हुए। विश्व-शान्ति के लिए प्रार्थना और प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की सांस्कृतिक यात्रा २००८ के फरवरी माह में चलती रही।

बरबिल् (उड़ीसा) के साधना शिविर के बाद स्वामी जी महाराज उड़ीसा के जाजपुर रोड पहुँचे। श्री गगन नायक की अगुआई में उमापड़ा के मा मंगला ट्रस्ट ने जाजपुर रोड के उमापड़ा स्थान पर माँ मंगलादेवी के मन्दिर का निर्माण किया था। ४ फरवरी को वहाँ के मूर्ति स्थापना समारोह के हवन में स्वामी जी सम्मिलित हुए। जाजपुर रोड नगर में देवी के विग्रह की भव्य शोभा-यात्रा निकाली गयी, जिसमें स्वामी जी ने भी भाग लिया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में सायंकाल में एक विशाल जनसभा आयोजित की गयी, जिसमें प्रवचन देते हुए स्वामी जी ने देवी माँ की महिमा का वर्णन किया। इसी से सम्बन्धित ५ फरवरी को मन्दिर में आयोजित किये गये उत्सव में भी स्वामी जी ने भाग लिया। सारा कार्यक्रम अत्यधिक सफल रहा और सारे क्षेत्र में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण लाने वाला हुआ। यह मन्दिर इस दृष्टि से एक विलक्षणता लिये हुए है कि मन्दिर की आध्यात्मिक आवश्यकताओं की सामान्य गतिविधियों के साथ-साथ यह वास्तु के ऐसे सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित है जो भक्तों की मानसिक व्याधियों को दूर करने के गुण लिये हुए है।

दिव्य जीवन संघ की बरगढ़ शाखा ने हाल ही में 'स्वामी शिवानन्द आश्रम' के नाम के नये प्रार्थना-भवन का निर्माण किया है। स्वामी जी ने ११ फरवरी को नव-निर्मित भवन का उद्घाटन किया। शाखा ने ९ से ११ फरवरी तक आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया था, जिसमें निकट के बरगढ़, सम्बलपुर, सुन्दरगढ़ और बलांगिर जिले के प्रतिनिधियों को भी आमन्त्रित किया गया था। इससे पहले ४

से १० फरवरी तक भागवत सप्ताह भी था। स्वामी जी ने ९ से ११ तक के कार्यक्रम में भाग लेते हुए विभिन्न सत्रों में प्रवचन दिये। श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द तथा अन्य सन्त भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। समस्त कार्यक्रम दिव्य जीवन संघ की गतिविधियों में नव-जीवन संचार करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुए।

१० फरवरी को स्वामी जी बलांगिर जिले की डुन्गुरीपाल्लि शाखा में गये और वहाँ इस अवसर पर आयोजित किये गये कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तथा सत्संग में उपस्थित भक्तों को प्रवचन दिया।

१४ से १६ फरवरी तथा दिव्य जीवन संघ की माल्कान्गिरि शाखा द्वारा एक तीन दिवसीय आध्यात्मिक सम्मेलन आयोजित किया गया था। १९७२ में आरम्भ हुई इस शाखा का, इस प्रकार का यह तीसरा सम्मेलन है। आस-पास की बहुत-सी शाखाओं के भक्त सदस्यों ने इसमें भाग लिया। सम्मेलन स्वामी जी की अध्यक्षता में हुआ तथा इसमें अन्य स्वामी जी भी सम्मिलित हुए। स्वामी जी ने सभी सत्रों में उपस्थित रह कर विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिये। सम्मेलन से समस्त क्षेत्र के भक्तों को अत्यन्त प्रेरणा प्राप्त हुई तथा सभी अत्यन्त लाभान्वित हुए। इससे शाखा की गतिविधियाँ भी पुनर्जीवित हो उठीं।

स्वामी जी १७ फरवरी को कोरापुट जिले की दिव्य जीवन संघ की जयपुर शाखा में गये। इस अवसर पर एक विशेष सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में भक्त जन अति उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। स्वामी जी ने सत्संग में प्रवचन दिया।

१८ फरवरी को स्वामी जी गंजाम जिले की चिन्गुडिघई शाखा में गये। शाखा ने नये प्रार्थना-भवन का निर्माण किया है जिसका स्वामी जी ने उद्घाटन किया। इस अवसर पर आयोजित किये गये सत्संग में स्वामी जी ने प्रवचन दिया। सायंकाल में स्वामी जी दिव्य जीवन संघ की कोडाला शाखा में गये और वहाँ आयोजित किये गये सत्संग में प्रवचन दिये।

स्वामी जी १८ से २२ फरवरी तक चिदानन्द हरमिटेज शान्ति आश्रम, बालिगुआली में ठहरे। १९ को स्वामी जी ने बालिगुआली गाँव की रामायण पारायण समिति द्वारा आयोजित रामायण कथा के कार्यक्रम के नवें दिवस के पूर्णाहुति उत्सव में भाग लिया। उस समय वहाँ एकत्रित हुए ग्रामवासियों को स्वामी जी महाराज ने सम्बोधित करते हुए प्रवचन दिये।

पुरी के नीलाचल सारस्वत संघ ने ठाकुर श्री श्री निगमानन्द सरस्वती (नीमापड़ा) के भक्तों के लिए उत्कल प्रादेशिक भक्त सम्मिलिनी का आयोजन किया था। स्वामी जी ने २२ फरवरी को इसके समापन समारोह में भाग लिया और 'सनातन धर्म की विशेषता' पर प्रवचन दिया। इस सम्मेलन में सहस्रों की संख्या में भक्त जन सम्मिलित हुए थे।

इसके बाद स्वामी जी महाराज गुजरात प्रान्त में गये। गुर्जर दिव्य जीवन संघ समिति ने २३ से २५ फरवरी तक तीन दिवसीय साधना शिविर तथा दिव्य जीवन सम्मेलन डाकोर में आयोजित किया था। इसमें गुजरात प्रान्त की दिव्य जीवन संघ की विभिन्न शाखाओं से बड़ी भारी संख्या में लोग भाग लेने के लिए आये थे। स्वामी जी ने साधना शिविर तथा दिव्य जीवन सम्मेलन में भाग लिया तथा विभिन्न सत्रों में प्रवचन भी दिये। स्वामी जी ने भावनगर के परम पूज्य श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी की शष्ट्यब्दिपूर्ति से सम्बन्धित डाकोर में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया। सभी कार्यक्रम अत्यन्त भलीभाँति आयोजित किये गये थे तथा अत्यन्त प्रेरणास्पद थे। भक्तों ने समस्त कार्यक्रमों में अति आनन्द और उत्साहपूर्वक भाग लिया अतः यह सब गुजरात प्रान्त की दिव्य जीवन संघ की शाखाओं की गतिविधियों को पुनर्जीवित करने में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ।

सरदार पटेल युनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर, आनन्द ने 'श्री मोटा एजुकेशन थिंकिंग एक्सटेन्शन चेयर' के तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय के सेनेट हाल में २६ फरवरी को एक प्रवचन (भाषण) आयोजित किया था तथा इसी उद्देश्य से स्वामी जी

को आमन्त्रित किया था। विश्वविद्यालय के वाईस चांसलर डा. बी. जी. पटेल कार्यक्रम के अध्यक्ष पद पर आसीन हुए। स्वामी जी ने कार्यक्रम में भाग लेते हुए 'इन्टर रिलेशनशिप बिटवीन एजुकेशन एण्ड स्पिरचुएलिटी' (शिक्षा और आध्यात्मिकता में परस्पर सम्बन्ध) विषय पर व्याख्यान दिया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज भी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे तथा इस अवसर पर उन्होंने भी व्याख्यान दिया।

दिव्य जीवन संघ की गान्धीनगर शाखा ने २७ और २८ फरवरी को आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किये थे तथा स्वामी जी को आमन्त्रित किया था। स्वामी जी शाखा में गये तथा भक्त जनों से भी मिले। गुजराती सिन्धी समाज हॉल में प्रातः-सायं आयोजित किये गये सार्वजनिक सत्संगों में भी स्वामी जी ने दोनों दिन भाग लिया तथा 'श्री स्वामी शिवानन्द जी द्वारा निर्देशित साधना का मार्ग', 'आधुनिक युग के सन्दर्भ में धर्म के महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त', 'ध्यान साधना' और 'भगवद्गीता का मानव-जाति को सन्देश' इत्यादि विविध विषयों पर प्रवचन दिये। इन कार्यक्रमों में पर्याप्त संख्या में लोगों ने भाग लिया तथा समस्त कार्यक्रमों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दिव्य जीवन संघ अहमदाबाद शाखा द्वारा २९ फरवरी को सुप्रसिद्ध शिव मन्दिर में सार्वजनिक सत्संग आयोजित किया गया था। स्वामी जी ने इसमें भाग लिया तथा 'गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की शिक्षाएँ' विषय पर प्रवचन दिया। इस अवसर पर भारी संख्या में भक्त जन उपस्थित थे।

दिल्ली में स्वामी जी महाराज ने १ मार्च को ईस्ट पंजाबी बाग में स्वामी शिवानन्द मेमोरियल इन्स्टीच्यूट के ट्रस्ट बोर्ड की मीटिंग में भाग लिया तथा उसके पश्चात् आश्रम मुख्यालय को वापस लौट आये।

आराधना के अवसर पर विशेष छूट

१ जुलाई २००८ से ३० सितम्बर २००८ तक

पुस्तकों पर छूट

३०० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर २०%

१००० रु. तक की पुस्तकों के आर्डर पर ३०%

१००० रु. से अधिक की पुस्तकों के आर्डर पर ३५%

सीडी, वीसीडी और कैसेटों पर छूट

किसी भी मूल्य/क्वांटिटि की खरीद पर २५%

पैकिंग तथा डाक खर्चा अलग से है। सभी आर्डरों के साथ ५०% अग्रिम धन-राशि भेजें।

यह विशेष छूट केवल भारत में ही भेजने के लिए उपलब्ध है।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, द शिवानन्द पब्लीकेशन लीग

पोस्ट : शिवानन्दनगर २४९१९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

फोन : (९१) ०१३५-२४३४७८०, २४३००४०; E-mail: bookstore@sivanandaonline.org

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अहिवारा (छत्तीसगढ़): शाखा ने माह मार्च २००८ में निज दैनिक सत्संग की नियमित गतिविधियों के सातत्य सहित एकादशी की तिथियों को विशेष पूजा, महामृत्युंजय मन्त्र का सामूहिक जप और श्री महाशिवरात्रि को विशेष पूजा इत्यादि भी परिचालित किये।

अहमदाबाद (गुजरात): शाखा द्वारा दिनांक १८ जनवरी से दिनांक २५ जनवरी पर्यन्त आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी द्वारा संचालित, प्रभात और सायंकाल में दो भिन्न स्थानों पर दो योगासन तालीम-शिविरों का आयोजन किया। तालीमार्थियों की संख्या १०८ थी। शाखा ने दिनांक २९ फरवरी को श्री कामेश्वर मन्दिर के हॉल में, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज का एक जाहीर प्रवचन भी आयोजित किया। पूज्य स्वामी जी कुछेक भक्तों के निवास स्थानों पर पधारे जहाँ अन्य भक्तजन भी एकत्रित हुए थे। वहाँ वातावरण अधिकतर शिवानन्द-परिवार के सदस्यों के उष्मापूर्ण सम्मेलन के समान था।

अम्बाला (हरियाणा): शाखा के दैनिक सत्संग और, आधिक्य में, प्रति रविवार को महामृत्युंजय मन्त्र का आधा घण्टा सामूहिक जप, प्रति सोमवार को शिव-मन्त्र, प्रति मंगलवार और शनिवार को श्री हनुमान् जी के स्तोत्रों के पाठ, प्रति गुरुवार को भजन और प्रति शुक्रवार को मन्त्र-जप इत्यादि समाविष्ट थे। शाखा के सत्संग-भवन के स्थापना-दिन निमित्त दिनांक २५ मार्च को विशेष सत्संग आयोजित हुआ। दिनांक ९ मार्च को दृश्य-श्राव्य कैसेट के साथ मासिक सत्संग तथा दो होमियोपैथिक चिकित्सालयों द्वारा समाज-सेवा का सातत्य रहा।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा द्वारा सम्पन्न द्विवार पूजाएँ, प्रभात-अपराह्न-सायंकाल के सत्रों में विविध स्तोत्र-पाठ आदि के आधिक्य में शाखा ने प्रति गुरुवार को प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकाल में साप्ताहिक सत्संग भी परिचालित किये। 'शिवानन्द-दिन' को पादुका-पूजा, 'चिदानन्द-दिन' को मन्त्र-जप तथा द्वितीय रविवार को भगवद्-गीता पारायण आदि अन्य नियमित गतिविधियाँ थी। शाखा ने एक भक्त के निवासस्थान पर एक 'चल-सत्संग' और समीपवर्ती एक ग्राम में भगवद्-गीता पारायण इत्यादि भी सम्पन्न किये।

बारिपदा (उड़ीसा): प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा और प्रति माह प्रथम रविवार को मासिक साधना-दिन आदि शाखा द्वारा सम्पन्न हुए। दिनांक २ जनवरी के शाखा के स्थापना-दिन को विशेष पादुका-पूजा, ५० अकिंचन जनों की नारायण-सेवा तथा अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए। कुष्ठरोगियों की एक संस्था में औषधियों का वितरण यथाक्रम सम्पन्न हुआ।

भंजनगर (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्नह्न 'Ponder These Truths' के स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग, विविध स्तोत्रपाठ सहित एकादशी सत्संग तथा सुन्दरकाण्ड पारायण सहित मासिक संक्रान्ति सत्संग आदि हैं। दिनांक २४ फरवरी को ३४० वाँ 'मासिक साधना-दिन' मनाया गया। दिव्य जीवन संघ, उड़ीसा, की इस प्रथम शाखा का ५८ वाँ स्थापना-दिन, दिनांक २५ जनवरी को पादुका-पूजा, हवन तथा समस्त ३०० प्रतिभागियों द्वारा प्रसाद-सेवन आदि सहित मनाया गया।

भावनगर (गुजरात): शाखा के साप्ताहिक सत्संग शनिवार को और अन्य दो सत्संग-केन्द्रों में प्रति बुधवार और शुक्रवार को सम्पन्न होते हैं। 'चिदानन्द-दिन' को पादुका-पूजा हुई। शाखा, किसी व्यक्ति के निधन अथवा किसी के व्यक्तिगत या पारिवारिक जीवन में कोई विपत्ति आने पर, उस स्थान पर, सम्बन्धित व्यक्ति की विनंती पर प्रार्थना-मण्डली प्रेषित करती है। प्रतिदिन शाखा के सदस्यों द्वारा दो अथवा तीन स्थानों पर शान्ति-प्रार्थना में उपस्थिति दी जाती है। शाखा ने प्रतिदिन ५० मरीजों के 'शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय' द्वारा, निःशुल्क इलाज तथा दैनिक योगासन-वर्ग की सेवा का सातत्य रखा। शाखा की विशेष गतिविधियों मेंह्नह्न(१) २०० प्रतिभागियों सहित, दिनांक १३ फरवरी से दिनांक १९ फरवरी पर्यन्त, आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी द्वारा संचालित दो सत्रों में, योगासन-तालीम वर्ग, (२) श्री महाशिवरात्रि पर विशेष पूजा, (३) श्री गौरांग महाप्रभु जी की जयन्ती पर संकीर्तन, (४) स्थानिक सिविल अस्पताल के ३५० मरीजों को फल तथा बिस्कुटों का वितरण आदि समाविष्ट थी।

बीकानेर (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँ : द्विवार पूजाएँ; दैनिक सत्संग; पादुका-पूजन और भजन-कीर्तन 'शिवानन्द-दिन' को; 'चिदानन्द-दिन' को महामृत्युंजय और गायत्री-मन्त्रों द्वारा यज्ञ तथा निर्धनों को मिठाइयों और फलों का वितरण; श्री सुन्दरकाण्ड और सिख-धर्मग्रन्थों के पाठ सहित दिनांक १९ और २९ मार्च को मातृ-सत्संग; अकिंचन छात्रों को आर्थिक सहाय; 'शिवानन्द आध्यात्मिक पुस्तकालय' तथा योगासन-वर्ग। विशेष गतिविधियाँह्नह्न (१) श्री महाशिवरात्रि : विशेष पूजा, ''ॐ नमः शिवाय'' मन्त्र का जप, रुद्राभिषेक आदि सहित दिनभर कार्यक्रम। (२) श्री गौरांग महाप्रभु जयन्ती : उनके जीवन विषयक स्वाध्याय और नृत्य सहित महामन्त्र-संकीर्तन आदि।

छत्रपुर (उड़ीसा) : शाखा ने दैनिक और प्रति गुरुवार के साप्ताहिक सत्संगों के आधिक्य में दो महिनों में १० चल-सत्संग सम्पन्न किये। 'शिवानन्द-दिन' और 'चिदानन्द-दिन' को पादुका-पूजा, 'संक्रान्ति-दिन' को 'श्री सुन्दरकाण्ड पारायण' आदि शाखा की नियमित गतिविधियाँ थी। शाखा ने 'नूतन-वर्ष दिन' को और दिनांक ६ जनवरी को परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज की शाखा की मुलाकात पर, निज सत्संग-भवन में, विशेष सत्संग भी आयोजित किये। दिनांक १३ फरवरी 'श्री वसन्त-पंचमी' को विशेष पूजा परिचालित हुई।

चेन्नै, अन्नानगर (तमिल नाडु): शाखा ने प्रार्थना, भजन, प्रवचन सहित निज 'शिवानन्द-योगालय' में, दिनांक ३० मार्च को मासिक सत्संग आयोजित किया।

गंगटोक (सिक्किम): शाखा ने अन्य एक सामाजिक संस्था की संयुक्तता में, दिनांक २१ मार्च से दिनांक २३ मार्च पर्यन्त त्रि-दिवसीय योग-शिविर आयोजित किया, जिसमें वेदान्त-विषयक प्रश्नोत्तर-सभाएँ भी समाविष्ट थी।

जयपुर, मालवीय नगर (राजस्थान): शाखा ने प्रति शुक्रवार को मातृ-सत्संग; नित्य स्वाध्याय; पादुका-पूजा, हवन और महामन्त्र-जप, 'शिवानन्द-दिन' और 'चिदानन्द-दिन' को परिचालित किये। प्रति मंगलवार को निर्धनों को अन्नदान सम्पन्न हुआ। शिवानन्द होमियोपैथिक औषधालय ने प्रतिदिन अनेक मरीजों के इलाज की नियमितता रखी। दिनांक २० जनवरी को भक्ति-संगीत और प्रसाद-वितरण के विशेष कार्यक्रम शाखा द्वारा आयोजित हुए।

जयपुर, राजा-पार्क (राजस्थान): नियमित गतिविधियाँह्लह्ल दैनिक प्रभातीय 'श्रीमद् भागवत' कथा, अपराह्न में 'श्री शिव-पुराण' स्वाध्याय, तथा सायंकाल के सत्संग, जिनमें प्रति गुरुवार को सवा घण्टे महामृत्युंजय मन्त्र का सामूहिक जप. प्रति शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण तथा अन्य दिनों को, 'श्री रामायण' स्वाध्याय और जप; प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग में गायत्री मन्त्र और महामृत्युंजय मन्त्र सहित हवन तथा विविध स्तोत्र-पाठ, प्रति सोमवार को मातृ-सत्संग, डा. सक्सेना और डा. दलेला द्वारा 'स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल होमियोपैथिक औषधालय' जिसके द्वारा माह मार्च में ८३२ मरीजों के इलाज किये गये। श्रीमती सरला सिंघवी द्वारा दैनिक योगासन-वर्ग; 'स्वामी शिवानन्द आध्यात्मिक लाईब्रेरी', कुष्ठरोगियों की एक संस्था को, कोरे राशनह्लह्ल६५ किलोग्राम अनाज, १५ किलोग्राम चीनी, २ किलो खाद्य-तेल, १ किलोग्राम चायपत्ती इत्यादि) का प्रदान; २४ निराधार विधवाओं को आर्थिक सहाय; निर्धनों को नित्य अन्न-दान और ८० छात्रों को मासिक शिष्य-वृत्ति)। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) दिनांक ३ मार्च से दिनांक ९ मार्च पर्यन्त एक आदरणीय स्वामी जी द्वारा वेदान्त विषयक प्रवचन। (२) श्री महाशिवरात्रि : प्रभात में विशेष पूजा और रुद्राभिषेक, महामृत्युंजय मन्त्र से हवन, रात्रिभर पूजा, इत्यादि। (३) फालगुन उत्सव : मातृ-सत्संग ने होली-गीत, फूल, प्रसाद द्वारा यह उत्सव मनाया। (४) होली-महोत्सव : पारम्परिक विधियाँ, पूजा और आनन्दोत्सव।

कंटाबाँजी (उड़ीसा): शाखा ने श्रीमद् भगवद्-गीता के स्वाध्याय सहित, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग सम्पन्न किये।

खाटिगुडा (उड़ीसा): शाखा ने, निज साप्ताहिक सत्संग प्रति गुरुवार को; दिनांक ८ मार्च को एक चल-सत्संग तथा 'श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पाठ' सहित एकादशी-सत्संग सम्पन्न किये। दिनांक २ मार्च को १२ घण्टे महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन और नारायण-सेवा सहित 'साधना-दिन' मनाया गया। श्री महाशिवरात्रि को प्रभात में पादुका-पूजा और रात्रिभर ''ॐ नमः शिवाय'' मन्त्र के जप सम्पन्न हुए।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): शाखा ने प्रति रविवार को ध्यान तथा स्वाध्याय सहित सत्संग तथा एकादशी-तिथियों को अपराह्न में मातृ-मण्डली द्वारा संकीर्तन और सायंकाल में पुरुष-वर्ग द्वारा संकीर्तन परिचालित किये। शाखा ने प्रतिदिन पुरुषों के लिए प्रभात में और सायंकाल में स्त्रियों के लिए दैनिक योगासन-वर्गों का सातत्य रखा।

मण्डासाही (उड़ीसा): शाखा ने श्रीमद् भगवद्-गीता के स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग और 'मासिक साधना-दिन' नियमित रूप से सम्पन्न किये। 'शिवानन्द-दिन' और 'चिदानन्द-दिन' को विशेष सत्संग तथा शाखा-स्थापना-दिनह्लह्ल४ मार्च को विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए।

नाभा (पंजाब): शाखा ने प्रति रविवार को, Awake! Realise Your Divinity! का स्वाध्याय, भजन-कीर्तन, ध्यान सहित साप्ताहिक सत्संग परिचालित किये।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़) : शाखा ने प्रार्थना, ध्यान तथा विविध स्तोत्रपाठ सहित दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय सभा प्रातः ४-३० से प्रातः ६-३० पर्यन्त; साप्ताहिक चल-सत्संग प्रति गुरुवार को; 'श्री सुन्दरकाण्ड पारायण' सहित मातृ-सत्संग प्रति शनिवार को और 'श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र', 'श्रीमद् भगवद्गीता' पारायण आदि एकादशी की तिथियों को सम्पन्न किये। ६ घण्टे महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन प्रति माह दिनांक ३ को होता है। दिनांक २५ फरवरी और १४ मार्च को विशेष हवन किये गये। 'श्री महाशिवरात्रि' को प्रातः ६-०० से सायंकाल ६-०० पर्यन्त 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का अखण्ड जप तथा रात्रि को भजन-कीर्तन सहित ६ घण्टों की पूजा आदि की सम्पन्नता हुई।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा ने निज नियम और पद्धति अनुसार प्रथम रविवार को 'श्री सुन्दरकाण्ड पारायण' सहित साप्ताहिक सत्संग, द्वितीय रविवार को ध्यान-तालीम, तृतीय रविवार को गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उपदेशों का स्वाध्याय तथा चतुर्थ रविवार को एक प्रवचन आदि का सातत्य रखा। दिनांक ३० मार्च, पंचम रविवार को प्रश्नोत्तर-सभा आयोजित हुई।

रायचुर (कर्नाटक) : शाखा-सदस्यों ने मार्च के पूर्ण माह, 'श्री राम जय राम जय जय राम', मन्त्र के १००० दैनिक जप किये।

रायपुर (छत्तीसगढ़): शाखा ने प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रति सोमवार को नाम-संकीर्तन तथा भजन; और प्रति एकादशी को विशेष पूजा और श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण परिचालित किये। दिनांक १६ फरवरी से दिनांक १९ फरवरी पर्यन्त, शाखा के शिव-मन्दिर में 'श्री राम पंचायतन' की प्राणप्रतिष्ठा के अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किये। दिनांक १६ को शोभा-यात्रा, दिनांक १७ और दिनांक १८ को अभिषेक सहित विशेष पूजा तथा प्राणप्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। दिनांक १९ को नगर-संकीर्तन के पश्चात् समस्त भक्त जनों

को साढ़े पाँच घण्टों पर्यन्त विशाल भण्डारे का प्रसाद वितरण किया गया। आदरणीय श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी शिवदासानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी ने निज पवित्र उपस्थिति से समग्र कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ : दैनिक द्विवार पूजाएँ, ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-ध्यान, जप, कीर्तन, स्तोत्रपाठ सहित प्रभातीय सभा, सायंकालीन भजन-कीर्तन; स्वाध्याय-वर्ग; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; मासिक गतिविधियों मेंह्हमाह के प्रथम शनिवार को 'श्री सुन्दरकाण्ड पारायण', प्रथम रविवार को समग्र भगवद्-गीता-पारायण; 'शिवानन्द-दिन' को पादुका-पूजा और 'ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय' मन्त्र का एक घण्टे पर्यन्त जप और चतुर्थ रविवार को 'साधना-दिन'। 'स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल' ने मार्च की माहावधि में २६५ मरीजों के इलाज किये। विशेष गतिविधियाँ ह्ह(१) श्री महाशिवरात्रि : विशेष पूजा और शिवसहस्रनामयुक्त आहुतियाँ, विविध स्तोत्रपाठ, ३ घण्टों पर्यन्त 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का अखण्ड जप और एक चल-सत्संग। (२) योग-शिविर २१४ तालीमार्थियों की प्रतिभागिता के साथ दिनांक २२ मार्च को एक स्थानिक कॉलेज में योग-तालीम-शिविर आयोजित हुआ।

शेरगढ़ (उड़ीसा): शाखा ने फरवरी के माह में साप्ताहिक सत्संग तथा 'साधना-दिन' सम्पन्न किये। श्री सरस्वती-देवी-पूजा भी आयोजित हुई। होमियोपैथिक चिकित्सालय द्वारा शाखा ने समाज-सेवा का सातत्य रखा।

साउथ बलाण्डा (उड़ीसा): शाखा ने साप्ताहिक सत्संग प्रति शुक्रवार को, पादुका-पूजा 'शिवानन्द-दिन' और 'चिदानन्द-दिन' को तथा प्रभात में पादुका-पूजा और सायंकाल में ३ घण्टों पर्यन्त श्री महामृत्युंजय मन्त्र का जप आदि संक्रान्ति दिन को सम्पन्न हुए। दिनांक २२ मार्च को महामन्त्र का ३ घण्टों पर्यन्त अखण्ड संकीर्तन सम्पन्न हुआ। शाखा द्वारा पूर्णिमा को विशेष सत्संग आयोजित हुआ। श्री महाशिवरात्रि को १२ घण्टों के 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र के अखण्ड जप के अनुसरण में एक विशेष सत्संग आयोजित हुआ।

सुनाबेडा, महिला शाखा (उड़ीसा): शाखा के दैनिक कार्यक्रमों में, पूजा के पश्चात् प्रभात में, श्रीमद् भागवत का पाठ और जप एवं सन्ध्यासमय महामन्त्र के १ घण्टे के संकीर्तन के पश्चात् गीता पाठ और जप समाविष्ट हैं। आश्रम में प्रति बुधवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति शनिवार को चल-सत्संग और प्रति रविवार को शिशु-विकास सत्संग आयोजित होते हैं। एकादशी-तिथियों को पादुका-पूजा और श्री विष्णु सहस्रनाम-पारायण परिचालित होते हैं। प्रति माह, 'चिदानन्द-दिन' को प्रातः ६-०० से सायंकाल ६-०० पर्यन्त महा-मृत्युंजय मन्त्र का अखण्ड जप किया जाता है। श्री वसन्त पंचमी को, श्री सरस्वती-पूजा अनेक बालकों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति में सम्पन्न हुई। श्री महाशिवरात्रि को प्रभात में पादुका-पूजा और हवन रात्रि-समय में, 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का २४ घण्टों पर्यन्त जप तथा रात्रिभर की पूजा आदि प्रमुख कार्यक्रम थे।

सुरेन्द्रनगर (गुजरात): शाखा ने प्रतिदिन सायंकालीन सत्संग और प्रति रविवार को 'श्री रामायण' विषयक प्रवचन आयोजित किये। शाखा की सुवर्ण-जयन्ती के कार्यक्रमों के अन्तर्गत शाखा द्वारा, 'नाम-महिमा' पुस्तिका का ज्ञान-प्रसाद और जप-माला का वितरण तथा समीपवर्ती अन्य ग्रामों सहित गौएँ, कौएँ, श्वान, पक्षी गण और चींटियाँ तथा जीव-जन्तुओं को भी खाद्य वितरित करने की व्यवस्था की।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा के द्विसाप्ताहिक सत्संग दिनांक ९ और दिनांक २३ मार्च को और अन्य दो रविवारों को चल-सत्संग आयोजित हुए।

वाबगाई (मणिपुर): शाखा ने मन्त्र-लेखन-स्पर्धा आयोजित की, जिसमें ५० छात्रों ने भाग लिया।

विशेष गतिविधियाँ

गुजरात में साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ के साथ संलग्न गुजरात की दिव्य जीवन संघ की शाखाओं ने, 'गुर्जर दिव्य जीवन संघ समिति' के उपक्रम से पावन धाम, डाकोर में आदरणीय श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी की जन्म-जयन्ती के हीरक महोत्सव की संयुक्तता के साथ दिनांक २३ फरवरी से, दिनांक २५ फरवरी २००८ पर्यन्त तीन दिवसीय शिविर आयोजित किया। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज, आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी निराकारानन्द जी, आदरणीय स्वामी भक्तिप्रियानन्द माता जी, आदरणीय प्रोफेसर श्री वासुदेव रणदेव जी और एक स्थानिक आदरणीय स्वामी जी ने आध्यात्मिक प्रवचन दिये। सुप्रसिद्ध पौराणिक श्री धार्मिकलाल पंड्याजी ने उनकी संगीतमय पौराणिक कथा-आख्यान में श्रोता-जनों को आनन्दित और प्रसन्न किये। भक्ति-संगीत के लोकप्रिय कलाकार श्री अयोध्याप्रसाद जी ने भजन प्रस्तुत किये। ४०० से अधिक पंजीकृत प्रतिनिधि-सदस्यों ने तथा जन्म-जयन्ती के उत्सव के लिए पधारे हुए अनेक भक्तों ने निज उपस्थिति दे कर भाग लिया। आदरणीय श्री अखिलेशभाई पाठक के नेतृत्व में सुप्रसिद्ध कृष्ण-मन्दिर पर्यन्त प्रभातफेरी में अनेक भक्त संलग्न हुए। दस पुस्तकों का तथा द्वैमासिक अंक, 'दिव्य जीवन ज्योत', का विमोचन किया गया। वडोदरा की सदस्या आदरणीय डा. मीनाक्षीबहन त्रिवेदी ने, होमियोपैथिक सेवाएँ निःशुल्क दी। आयुष्य-होम तथा महामृत्युंजय-मन्त्र-होम सम्पन्न हुए। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज, अन्तर्राष्ट्रीय परमाध्यक्ष, दिव्य जीवन संघ ने आदरणीय स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी, भक्त-गण तथा सम्पूर्ण कार्यक्रमों को उनका पवित्र सन्देश और उनके पावन, मंगल आशीर्वाद प्रेषित किये।

चीथड़ों में लिपटे अपने भगवान् के दर्शन करें!

दरिद्रों की सेवा करना, रोगियों की सेवा करना, इससे बढ़ कर कोई यज्ञ नहीं है। यह आपको हृदय को शुद्ध करेगा। इससे आपके हृदय में दिव्यता का प्रकाश हो जायेगा।

सेवा भावना के साथ करें, कर्मयोग पद्धति के ज्ञान सहित करें। इस महान् कार्य को आप नहीं कर रहे, यह सेवा आप नहीं कर रहे हैं, वही हैं जो निराश्रितों को आश्रय प्रदान करते हैं, इसे स्पष्टतया जान लें। प्रभु की दिव्य सेवा करने के लिए उनके हाथों में उपकरण मात्र बन कर कार्य करें।

असहायों की सेवा आपको आत्मभाव से करनी चाहिए। ऐसी सेवा में ही आपका मोक्ष निहित है। भ्रातृत्व की भावना भी इतनी सुदृढ़ नहीं है कि उसके द्वारा सामान्य मानवीय स्वार्थपकता से स्वयं को बचाया जा सके। भाई-भाई एक दूसरे से झगड़ते रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको सबसे अधिक प्रेम करता है। आदर्श यह रखना चाहिए कि हम रोगियों पीड़ितों और असहायों की सेवा उसी प्रेमपूर्ण भाव से करें और जैसा प्रेम हम स्वयं अपने प्रति करते हैं। अपने सामने इस एक सच्चाई को सदा बनाये रखेंह्नह्नसारी सृष्टि में एक मात्र वही सत्ता विद्यमान है जो आपमें हैह्नह्नजो आपमें हैह्नह्नआपकी अपनी आत्म सत्ता है। ऐसी भावना बनाये रखने से ही वास्तविक निष्काम सेवा हो सकना सम्भव है।

आपका हृदय पिघल जाना चाहिए। जब आप निराश्रितों की सेवा कर रहे हो तो आपका रोम-रोम प्रेम से परिपूर्ण हो जाना चाहिए।

जब आपके हृदय पर ऐसे प्रेम का राज्य हो जायेगा तब आपका प्रयत्न करेंगे कि सृष्टि के कण-कण में स्वयं अपने आपको या भगवान् को देखें। तभी ऐसा हो पायेगा कि आप अपने द्वार पर भिक्षापात्र लिये, चिथड़ों में लिपटे भगवान् को देख पायें, पहचान पायें। तब ही आप सड़क के किनारे असह्याय अवस्था में पड़े रोगी के रूप में पड़े भगवान् की सहायता के लिए दौड़ सकेंगे। तब आप गरीबों, बेसहारा बेघरों के रूप में छिपे हुए भगवान् को भोजन, वस्त्र शिक्षा और प्रसन्नता बाँटने निकल सकेंगे। मेरा आज के लिए आपको यही सन्देश है : हीन से हीनतम, निर्धन से भी निर्धन व्यक्ति आपके भगवान् हों!

निःस्वार्थ सेवा की भावना जागृत करें। यदि जिस प्रकार पुण्ज को उत्पन्न करेगी उससे सारा जगत् उद्भाषित हो जायेगा। वह प्रत्येक नर-नारी के हृदय से स्वार्थपरता के अन्धकार को दूर कर देगी।

ह्नह्नस्वामी शिवान्द